

॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ श्री लक्ष्मी नमः ॥

श्री लक्ष्मी स्तोत्र

Laxmi Stotra — संपूर्ण स्तोत्र पाठ, सरल हिंदी भावार्थ एवं पाठ विधि सहित

रचयिता: देवराज इन्द्र (ब्रह्मवैवर्त पुराण) ✓ निःशुल्क प्रामाणिक PDF

॥ संपूर्ण स्तोत्र पाठ (सरल हिंदी भावार्थ सहित) ॥

प्रारंभ

॥ ॐ श्री महालक्ष्म्यै नमः ॥
अथ इन्द्रकृतं श्रीलक्ष्मीस्तोत्रम्
इन्द्र उवाच

भावार्थ: देवराज इन्द्र हाथ जोड़कर भगवती महालक्ष्मी के श्रीचरणों में नतमस्तक होकर स्तुति करते हुए कहते हैं —

श्लोक १

ॐ नमः कमलवासिन्यै नारायण्यै नमो नमः।
कृष्णप्रियायै सारायै पद्मायै च नमो नमः॥ १॥

भावार्थ: कमल के पुष्प पर निवास करने वाली, भगवान नारायण की आद्यशक्ति नारायणी! आपको बारंबार नमस्कार है। भगवान श्रीकृष्ण की नित्य आल्हादिनी प्रिया, संपूर्ण सृष्टि के सार-तत्त्व और कमल के समान पावन पद्मा देवी को मेरा कोटि-कोटि प्रणाम है।

श्लोक २

पद्मपत्रेक्षणायै च पद्मास्यायै नमो नमः।
पद्मासनायै पद्मिन्यै वैष्णव्यै च नमो नमः॥ २॥

भावार्थ: कमल-दल के समान विशाल व करुणामय नेत्रों वाली और खिले हुए कमल के समान परम सुंदर मुख वाली माता! आपको नमस्कार है। पद्मासन पर सुशोभित, कमलों के वन में विहार करने वाली पद्मिनी और भगवान विष्णु की शक्ति वैष्णवी देवी को मेरा सादर नमन है।

श्लोक ३

सर्वसम्पत्स्वरूपायै सर्वदात्र्यै नमो नमः।
सुखदायै मोक्षदायै सिद्धिदायै नमो नमः॥ ३॥

भावार्थ: संसार की समस्त संपदाओं, ऐश्वर्य और सुखों की साक्षात् स्वरूप तथा सभी जीवों को सब कुछ प्रदान करने वाली सर्वदात्री माता! आपको नमन है। भक्तों को सांसारिक सुख, परम मोक्ष और समस्त अलौकिक सिद्धियां देने वाली देवी को मेरा बारंबार प्रणाम है।

श्लोक ४

हरिभक्तिप्रदात्र्यै च हर्षदात्र्यै नमो नमः।
कृष्णवक्षःस्थितायै च कृष्णेशायै नमो नमः॥ ४॥

भावार्थ: भगवान श्रीहरि के पावन चरणों में अनन्य भक्ति प्रदान करने वाली और जीवन में सच्चा हर्ष व आनंद भरने वाली माता! आपको नमस्कार है। भगवान श्रीकृष्ण के वक्षःस्थल पर सदा विराजने वाली और उनकी ईश्वरी शक्ति को मेरा सादर प्रणाम है।

श्लोक ५

कृष्णशोभास्वरूपायै रत्नपद्मे च शोभने।
सम्पत्त्यधिष्ठातृदेव्यै महादेव्यै नमो नमः॥ ५॥

भावार्थ: भगवान श्रीकृष्ण के संपूर्ण सौंदर्य और शोभा का साक्षात् स्वरूप तथा दिव्य रत्नों से जड़े कमल पर शोभा पाने वाली माता! चराचर जगत् के समस्त ऐश्वर्य और वैभव की अधिष्ठात्री महादेवी को मेरा बार-बार नमस्कार है।

श्लोक ६

शस्याधिष्ठातृदेव्यै च शस्यायै च नमो नमः।
नमो बुद्धिस्वरूपायै बुद्धिदायै नमो नमः॥ ६॥

भावार्थ: धरती के समस्त अन्न, फसलों और धान्य की अधिष्ठात्री तथा स्वयं अन्न-धन के रूप में व्याप्त देवी! आपको प्रणाम है। साक्षात् सद्बुद्धि के स्वरूप और साधकों को निर्मल विवेक व ज्ञान प्रदान करने वाली माता को मेरा नमन है।

श्लोक ७

वैकुण्ठे या महालक्ष्मीर्लक्ष्मीः क्षीरोदसागरे।
स्वर्गलक्ष्मीरिन्द्रगेहे राजलक्ष्मीर्नृपालये॥ ७॥

भावार्थ: जो भगवती वैकुण्ठ धाम में महालक्ष्मी रूप में, क्षीरसागर में समुद्र-तनया लक्ष्मी रूप में, अमरावती में इन्द्र के भवन में स्वर्गलक्ष्मी रूप में और भूलोक में राजाओं के महलों में राजलक्ष्मी के रूप में प्रतिष्ठित हैं, उन सर्वव्यापी देवी को मेरा नमन है।

श्लोक ८

गृहलक्ष्मीश्च गृहिणां गेहे च गृहदेवता।
सुरभिः सा गवां माता दक्षिणा यज्ञकामिनी॥ ८॥

भावार्थ: जो गृहस्थों के घरों में सुख-शांति प्रदायिनी गृहलक्ष्मी और कुल की अधिष्ठात्री गृहदेवता हैं; जो गौमाता के रूप में समस्त कामनाएं पूर्ण करने वाली कामधेनु 'सुरभि' हैं और यज्ञ-अनुष्ठानों को सफल बनाने वाली 'दक्षिणा' हैं — उन भगवती को मेरा प्रणाम है।

श्लोक ९

अदितिर्देवमाता त्वं कमला कमलालये।
स्वाहा त्वं च हविर्दाने कव्यदाने स्वधा स्मृता॥ ९॥

भावार्थ: हे देवी! आप ही समस्त देवताओं को जन्म देने वाली देवमाता 'अदिति' हैं और कमल में वास करने वाली 'कमला' हैं। यज्ञों में देव-आहुति देते समय आप 'स्वाहा' रूप में तथा पितरों को तर्पण करते समय आप 'स्वधा' रूप में पूजी जाती हैं।

श्लोक १०

त्वं हि विष्णुस्वरूपा च सर्वाधारा वसुन्धरा।
शुद्धसत्त्वस्वरूपा त्वं नारायणपरायणा॥ १०॥

भावार्थ: हे माता! आप भगवान विष्णु की अभिन्न शक्ति हैं और सबको अपनी गोद में धारण करने वाली साक्षात् 'वसुंधरा' (पृथ्वी) हैं। आप विशुद्ध सत्त्वगुणमयी हैं और सदा अपने प्रभु श्रीनारायण के ध्यान व सेवा में तत्पर रहती हैं।

श्लोक ११

क्रोधहिंसावर्जिता च वरदा च शुभानना।
परमार्थप्रदा त्वं च हरिदास्यप्रदा परा॥ ११॥

भावार्थ: आप क्रोध और हिंसा से सर्वथा मुक्त, परम शांत और मनोहर मुख वाली वरदायिनी माता हैं। आप साधकों को जीवन का परमार्थ (मोक्ष) देने वाली और भगवान श्रीहरि की पावन दास्य-भक्ति प्रदान करने वाली पराशक्ति हैं।

श्लोक १२

यया विना जगत् सर्वं भस्मीभूतमसारकम्।
जीवन्मृतं च विश्वं च शश्वत् सर्वं यया विना॥ १२॥

भावार्थ: हे माता! आपकी कृपा के बिना यह संपूर्ण जगत् राख के ढेर के समान निस्तेज और असार हो जाता है। आपकी दृष्टि के अभाव में यह सारा संसार जीवित रहते हुए भी मृतक के समान चेतना-शून्य प्रतीत होता है।

श्लोक १३

सर्वेषां च परा माता सर्वबान्धवरूपिणी।
धर्मार्थकाममोक्षाणां त्वं च कारणरूपिणी॥ १३॥

भावार्थ: आप चराचर जगत् के समस्त जीवों की परम स्नेहमयी माता और संकट में साथ निभाने वाली आत्मीय बंधुरूपिणी हैं। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष — इन चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति का मूल कारण आप ही हैं।

श्लोक १४

यथा माता स्तनान्धानां शिशूनां शैशवे सदा।
तथा त्वं सर्वदा माता सर्वेषां सर्वरूपतः॥ १४॥

भावार्थ: जैसे एक माता अपनी गोद के अबोध शिशु का बचपन में वात्सल्यपूर्वक पालन-पोषण करती है, उसी प्रकार हे जगज्जननी! आप भी समस्त प्राणियों का हर रूप में निरंतर पालन, पोषण और रक्षा करती हैं।

श्लोक १५

मातृहीनः स्तनत्यक्तः स चेज्जीवति दैवतः।
त्वया हीनो जनः कोऽपि न जीवत्येव निश्चितम्॥ १५॥

भावार्थ: माता से बिछड़ा और दूध से वंचित बालक भी शायद भाग्यवश जीवित रह जाए, परंतु हे देवी! आपकी कृपा-दृष्टि से वंचित कोई भी मनुष्य इस संसार में सुखपूर्वक कभी जीवित नहीं रह सकता — यह अकाट्य सत्य है।

श्लोक १६

सुप्रसन्नस्वरूपा त्वं मां प्रसन्ना भवाम्बिके।
वैरिग्रस्तं च विषयं देहि मह्यं सनातनि॥ १६॥

भावार्थ: हे सदा प्रसन्न और करुणामयी रहने वाली माँ अम्बिके! मुझ पर भी प्रसन्न हो जाइए। हे सनातनी शक्ति! शत्रुओं द्वारा छीन लिया गया मेरा खोया हुआ देव-लोक और राज्य-ऐश्वर्य मुझे पुनः प्रदान कीजिए।

श्लोक १७

वयं यावत् त्वया हीना बन्धुहीनाश्च भिक्षुकाः।
सर्वसम्पद्विहीनाश्च तावदेव हरिप्रिये॥ १७॥

भावार्थ: हे हरिप्रिये! जब तक कोई मनुष्य आपकी कृपा से वंचित रहता है, तभी तक वह बंधु-बांधवों से हीन, भिक्षुक और समस्त धन-संपदाओं से रिक्त होकर भटकता है। आपकी दृष्टि पड़ते ही दरिद्र भी राजा बन जाता है।

श्लोक १८

राज्यं देहि श्रियं देहि रूपं देहि शुभानने।
कीर्तिं देहि धनं देहि यशो मह्यं च देहि वै॥ १८॥

भावार्थ: हे शुभ मुख वाली मंगलमयी माता! मुझे राज्य, लक्ष्मी, कांति, संसार में कीर्ति, अक्षय धन और निर्मल यश प्रदान कीजिए।

श्लोक १९

कामं देहि मतिं देहि भोगान् देहि हरिप्रिये।
ज्ञानं देहि च धर्मं च सर्वसौभाग्यमीप्सितम्॥ १९॥

भावार्थ: हे विष्णुप्रिया! मुझे मनोवांछित सिद्धि, श्रेष्ठ बुद्धि, धर्मानुकूल सुख-भोग, तत्त्वज्ञान, धर्म-निष्ठा और मनचाहा समस्त सौभाग्य प्रदान कीजिए।

श्लोक २०

प्रभावं च प्रतापं च जयं सर्वत्र मे कुरु।
बलं वीर्यं च शिष्येभ्यो ज्ञानं देहि सनातनि॥ २०॥

भावार्थ: हे सनातनी देवी! मुझे तेज, पराक्रम और सब क्षेत्रों में विजय प्रदान कीजिए। हमारे भीतर आत्मबल, सामर्थ्य और श्रेष्ठ ज्ञान का प्रकाश भर दीजिए।

फलश्रुति

इदं स्तोत्रं महापुण्यं त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।
कुबेरतुल्यः स भवेद् राजराजेश्वरो महान्॥ २१॥

भावार्थ: जो भी मनुष्य इस परम पावन लक्ष्मी स्तोत्र का तीनों संध्याओं (प्रातः, मध्याह्न और सायं) में नित्य पाठ करता है, वह धन के देवता कुबेर के समान समृद्ध और महान ऐश्वर्यशाली बन जाता है।

फलश्रुति

पञ्चलक्षजपेनैव स्तोत्रसिद्धिर्भवेन्नृणाम्।
सिद्धस्तोत्रं यदि पठेन्मासमेकं तु सन्ततम्॥
महासुखी च राजेन्द्रो भविष्यति न संशयः॥ २२॥
॥ इति श्रीब्रह्मवैवर्ते महापुराणे प्रकृतिखण्डे इन्द्रकृतं लक्ष्मीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

भावार्थ: पाँच लाख जप से साधक को इस स्तोत्र की सिद्धि प्राप्त होती है। यदि कोई व्यक्ति सिद्ध होने पर एक मास तक निरंतर इसका श्रद्धापूर्वक पाठ करे, तो वह जीवन में महासुखी और राजाओं के समान सम्मानित होता है — इसमें लेशमात्र भी संशय नहीं है।

🪔 नित्य पाठ विधि एवं नियम

- **शुभ दिन एवं काल:** शुक्रवार का दिन, पूर्णिमा तिथि, धनतेरस, दीपावली की रात्रि और नवरात्रि के दिन इस पाठ हेतु सर्वोत्तम हैं। प्रतिदिन प्रातःकाल स्नान के उपरांत सूर्योदय के समय या सायंकाल गोधूलि वेला में दीपक प्रज्वलित कर पाठ करें।
- **दिशा एवं आसन:** पूजा स्थल में उत्तर या ईशान (उत्तर-पूर्व) दिशा की ओर मुख करके बैठें। बैठने के लिए लाल या पीले रंग के ऊनी या रेशमी आसन का उपयोग करें।
- **दीपक एवं धूप:** माँ लक्ष्मी के समक्ष गाय के शुद्ध घी का अखंड दीपक या तिल के तेल का दीपक जलाएं। साथ में सुगंधित धूप या अगरबत्ती लगाएं।
- **पूजन सामग्री एवं अर्पण:** देवी की प्रतिमा या चित्र पर कुमकुम, अक्षत, चंदन और लाल पुष्प (विशेषकर कमल या लाल गुलाब) अर्पित करें। भोग के रूप में गाय के दूध से बनी खीर, बताशे, मखाने, सफेद मिष्ठान्न या मौसमी फल चढ़ाएं।
- **पाठ की संख्या:** दैनिक साधना में इस स्तोत्र का १, ३ या ११ बार पाठ करना अत्यंत शुभ होता है। आर्थिक संकट के समय शुक्रवार से आरंभ कर लगातार २१ या ४१ दिनों तक इसका नित्य ११ बार पाठ करने का संकल्प लें।

🌸 पाठ के अद्भुत लाभ

- **घोर दरिद्रता और कर्ज से मुक्ति:** *'वयं यावत् त्वया हीना बन्धुहीनाश्च भिक्षुकाः, सर्वसम्पद्विहीनाश्च तावदेव हरिप्रिये'* — स्तोत्र का यह श्लोक प्रमाणित करता है कि माँ की कृपा दृष्टि पड़ते ही मनुष्य के जीवन से दरिद्रता और कंगाली का समूल नाश हो जाता है।
- **खोए हुए वैभव और प्रतिष्ठा की पुनः प्राप्ति:** *'वैरिग्रस्तं च विषयं देहि मह्यं सनातनि'* — जिस प्रकार इन्द्र को उनका छीना गया स्वर्ग-राज्य पुनः मिल गया था, उसी प्रकार व्यापार में घाटा, नौकरी में रुकावट या खोया हुआ सामाजिक सम्मान इस पाठ से पुनः प्राप्त होता है।
- **कुबेर के समान अक्षय धन-धान्य:** *'इदं स्तोत्रं महापुण्यं त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः, कुबेरतुल्यः स भवेद् राजराजेश्वरो महान्'* — फलश्रुति के अनुसार तीनों संध्याओं में पाठ करने वाला साधक कुबेर के समान समृद्ध और ऐश्वर्यवान बनता है।
- **घर में सुख-शांति और गृहलक्ष्मी की स्थिरता:** *'गृहलक्ष्मीश्च गृहिणां गेहे च गृहदेवता'* — जहाँ इस स्तोत्र का नित्य पाठ होता है, वहाँ पारिवारिक कलह समाप्त होती है और घर में लक्ष्मी का स्थायी वास होता है।
- **सद्बुद्धि और धर्मपरायणता की प्राप्ति:** *'कामं देहि मतिं देहि भोगान् देहि हरिप्रिये, ज्ञानं देहि च धर्मं च सर्वसौभाग्यमीप्सितम्'* — यह स्तोत्र धन के साथ-साथ सही निर्णय लेने की विवेक-बुद्धि और आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करता है।